सड़के

मैं यह लेख इस लिये लिख रहा हूँ क्योकि मैने अपनी भतीजी सुमि से इस सम्बन्धसे वचनबध्द हूँ । भारत की सडको के ही बारे मे होगा यह लेख क्योकि सुमि भारत म`रहती है और मुझे भी भारत की सडको से प्यार है किन्तु उनकी दशा पर मुझे रोना आता है हमने अपनी दस माह की यात्रा के दोरान जो उनका हाल देखा, तो ेई तो उनका दुखडा रोयेगा तो हमे सोचा क्यो हम ही यह कहानी शुरु कर दे ।

दुनिया का सबसे वडा पीक दान कहाँ पाया जाता है? उत्तर साफ है भारत की सडको मे । बह कही की भी हो सकती यदि उत्तर भारत की हुई यानि बनारस, लखनऊ या पटना आदि कि तो मत पूछिये क्या हालत होगी बेचारी की, मारे शरम के लाल रंग की हो गई होगी । आप सोच रहे होगे कही सडके भी लाल होती है पर एसा कुछ नही हुआ पान की पीको से लाल हो रही है सडके ही नही घर आफिस की दीवारे कोने भी ।

अब आगे देखा जाय इस बेचारी सडक पर कय बीतती है । यह बनाई इसलिये ाती है कि इन पर रिक्शा, बैलगाडी, मोटर, साईकिल इत्यादि को आदमियो के साथ चलने को मिले पर अप हमारे साथ साथ चले तो आपको पता चलेगा कि क्या नही होता है उसे इनके आलावा । जिन सड्को पर यदा कदा ही सवार जाती है उनपर क्रिकेट खेली जा सकती है गिल्ली डन्डा खेला जा सकता है मुर्गिया लडाई जा सकती है कुत्ते, बिल्लिया, या कबूत्तर लडये जाते है चाहे यह सब सडके नेशनल हाईवे का खिताब ही क्यो न पा चुकी हो । बच्चे कंचे खेल सकते है, ताश खेले जाते है, इन पर धान सुखाया जाता है, बान ब धान भी कूटे जाते है, चावल , गेहूँ, दाले आदी भी सुखाई जाती है । कपडे, ओरते या सरदार जी अपने बाल भी सुखाते ह, कही इन पर बैठ कर धूप भी सेकी जाती है, कुछ और नही हो करने को तो इन पर बैठ कर गप्पे ही लगा लो । हुक्का पीने को बडी माकूल जगह है । कार, स्कूटर या ट्रक आदि को रिपेयर करने के लिये बहुत ही जरुरी जगह है ा इनको पाकिगं लट मे बदला जा सकता है, हाँ यदि भगबती जागरण करना है तो आप कोई भी सडक को रोक सकते है । मगर कुम्भ मेलो मे एक तरफा पैदल आदमी चल सकते है तब वहाँ वाहन सर्वथा बर्जित हो जाते हैं ।

आईये जब यह इतनी महत्वपूर्ण चीज है तो इनका राख रखाव भी करना पडता होगा, पर राख रखाव के बारे जितना कम कहा जाय उतना अच्छा होगा । राजस्थान मे तो कही कही इतने गड्ढे है कि सडक को आपको दुरबीन से देख कर खोजना पडेगा और यह इसलिये नही कि इन पर रेत जमा हो गई है , वैसे वह भी होता है ।

सड़को रानियां होती है ट्रके और आप सफर कर रहे है तो ट्रको के पीछे लिखी हुई इबादते हिदायते बिना पढ़े आप रह ही नही सकते है, इतनी अधिक दिलचस्प बाते पढने को मिली होगी कि आप इन्हे भूल ही नही सकते है मै आपको क्या बताऊ आपको मुछसे ज्यादा पता होगी और उनको यहाँ लिखना मुमकिन नही होगा । आप बोर नही हो सकते है चाहे आप लेट होने के चक्कर मेकितने ही दुखी क्यो न हो रहे हो, तो देखिये यह आपको खुशी रखने मे भी आढे आती हैं । अगर इस पर यह रानिया सड़क रोके है आपको अपना सिर पीटने का मन करेगा कि भगवान ने आपको पंख क्यो नही दिये ऐसे समय के लिये नही तो आप भी अपनी कार सहित उड़ कर पार हो जाते ।

इसके आलावा अगर कही खुदा न खास्ता सड़क सही हालत मे है तो यह सच मानिये कि उस पर से कोई नेता गुजर गये होगे या यदि कही गुज़रने वाले हुये तो अपने समय की खैर भगवान से मनाईये । वरना यह असम्भव स्थिति होगी की सडक को अच्छी स्थिति मे क्यो रक्खा जाय जी आम आदमी के लिये । अगर आप आम आदमी है और अच्छी सड़क की उम्मीद रखते है तो यह आपकी नासमझी मानी जायेगी ।

पार्क की तो बात ही क्या सड़के भी रोकी जा सकती है यदि कोई धार्मिक अनुष्ठान, शादी, पूजा, उत्सव या उपलक्ष्य हो, किसी राज्य अधिकारी मंत्री आदि की सवारी को उधर से जाना हो तो ।

एक बहुत ही महत्वपूर्ण घोषणा रह गई सड़क के बारे मे कि जब जी चाहे जिस जगह और जिस भी समय आप इनका ईस्तेमाल कूड़ा फेकने के लिये कर सकते है क्योकि भारत मे आपको इनसे बड़ कूड़ा घर नही मिलेगा किसी गाँव शहर या कस्बे मे। एसा क्यो है कोई नही जानता है क्योकि गन्दा करना हमारा धर्म है सफाई करना सरकार का और हम क्या करे मारा पढोसी भी डलता है कूड़ा सड़क पर, तो हम भी डालेगें । सरकार अब अग्रेजो की नही रही पर हमे इससे क्या ? पर हम यह भूल जाते है कि हमारा काममस्याये पैदा करना ही नही है उनको सुलझाना भी हमारे ही हाथ मे है । कूढे के ढेर हमारे ही बनाये हुये है जो इन सड़को पर यातायात मे रुकावट और हमारे ही अपने देश वासियो के अस्वास्थता का एक बहुत बडा कारण बन चुके है ।

हअँ एक बात अभी -अभी याद आई कि यदि आपके पास एक अदद गाय है और आप चार के बारे मे चिन्तित है तो चिन्ता छोड़िये सड़क पर, खुली सड़को पर छोड दीजिये सड़को का भी कुछ वोझ हल्का हो जायेगा और आपका भी । और सांडो कोई रखना नही चाहता है आप उन्हे खुली सड़को पर छोड सकते है जो सड़को के राजा का खिताब हासिल कर चुके है रानी की बात उपर लिखी जा चुकी है । हम भारतियो को सर्वश्रेष्ट होना चाहिये सान्डो से रक्षा करने मे कयोकि हमे तो रोजमर्रा के अभ्यास के कारण, स्पेन के लोग अपने को बेकार ही इस खेल का माहिर समझते है । जबकि बहाँ पर यह खेल सड़क पर साल मे एक बार ही खेला जाता है सड़को पर सांडो को छोडा जाता है और लोगबाग उनसे अपनी जान वचाने के लिये तड़बतड़ भागते है । योरुप ब अमरकिा से लोग हजारो लाखो डालर खर्च करके यह स्पेन का सड़क पर साँड का खेल देखने के लिये, लेकिन हमारे देश मे यह खेल रोज हर शहर,गाँव या कस्बे मे हर रोज हर सडक पर और कही पर भी मुफ्त देखा जा सकता है वशरते पास मे मन्डी, अनाज, फल या सब्जी की हो। पर्यटक विभाग इस बात को नोट करे आमदनी का जरिया बढ जायेगा और अधिक पर्यटको को हम अकिषित कर पायगे हम अपने देश में, हमे क्या किइससे हमारे देश वासियो लको असुविधा होती है ? अब एक कविता करने का जी चाह रहा है ।

गाय हमारी माता है पर दूध भैस का भाता है
चाहे हमे रास नही आता है क्योकि हमारी बुध्दी को ठस बनाता है ।
सांडो को हमेशा खुला ही सड़क पर छोडते है

इससे हम अपने ही देशवासियो को मुफ्त ही मनोरंजन देते है ।

भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ पर बहुत रंग की सड़के होती है जबकि पुरे संसार मे दो रंग की पाई जाती है । एक भूरी दूसरी काली पर हमारे भारत मे भूरी सलैटी काली पीली सफेद मटमैली लाल सभी रंग की पाई जात है क्योकि हमारे देश की मिटटी के बहुत से रंग होते है । कही कही परसड़को से ज्यादा पगडन्डिया चौडी होती है ताकि इन पर सड़को से ज्यादा तेजी से चला जा सकता है ।

यह मत समझिये कि हमे सड़क बनाना नही आता है । हमारा तकनीकी ज्ञान इतना अधिक है कि हमसे अच्छी ब कठिन सबसे उचाई पर सड़के दुनिया मे कोई नही बना सकता है । हम यह बात इसलिये नही कह रहे है कि हमारा अपना सहपाठी भारतीय सड़क अनुस्धान केन्द्र नई दिल्ली का डायरेक्टर है । हिमाचल की दिल्ली से आगरा व जयपुर की सड़के इसक एक मिसाल है । यहाँ पर यह लिखना अनुचित नही होगा कि अमरीका के डेटराईट शहर मे जहाँ हम रहते है वहाँ की सड़के भी बहुत ही खराव है । मैने एक बार अपने उस मित्र से सवाल पूछा जो हर जनात जनना चाहती है कि हमे आजादी के इतने साल भी अच्छी सड़के बनाना क्यो नही आया ? उसका जबाब था हम अपनी इच्छानुसार ही सड़के बनाते है । और तो और हम इतने तेज हे कि कुछ सड़के जो नक्शो मे तो है पर इन्हे आप प्रत्यक्ष रुप से वही पर देश सकते है । उन सड़को कया हुआ कोई नही जानता जनता जानना चाहती है पर हमारे अधिकारियो को व नेताओ को जबाब देने का समय नही जो जानते है उसका उत्तर बह जबाब नही देना चाहते है क्योकि वह किसी के प्रति जबाब देह नही है खास तौर पर आम जनता के प्रति तो कोई भी नही है । यह स्ड़के कहाँ चली गई हमारे नेताओ को, इन्जिनियरो को पता है पर हमे भी कुछ कछ पता चल गया है हम आपको बता दे लगे हाथो बह कुछ लगो के पेट व कुछ की जैबो मे चली गई है पर लोग जो खा गये है डकार भी नही लेते है, अब तक हज्म भी हो गई होगी।

हमे एक चुटकिला याद आ रहा है मने एक गाँव बाले से पूछ लिया कि भय्या यह सड़क कहाँ जाती है तो उसने उत्तर दिया हमको वह यह भाई सहब यह कही नही जाती है यह तो यही रहती है आपको कहाँ जाना वह हम बता सकत है कि आप कैसे जायेगे पूर्व पश्चिम उतर या दखिन ।

अन्त मे -

बहुत निकले मेरे अरमा इन सड़को के लिये,
फिर भी बहुत कम निकले इस लेख के लिये ।

रशिम उमेश रोहतगी नोवी मिचिगन अमरीका

Umesh Rashmi Rohatgi 24161 Nilan Drive Novi MI 48375 USA Phone☹248)471-5786
Webpage :www.rurohatgi.com Email : rurohatgi@yahoo.com